Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.5442, Volume 08, No. 04, October, 2018, pp. 314-317

उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अभिभावकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन

निशा शर्मा*

i:Lrkouk

भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक सुषमा के प्रति जितना आदर और आकर्षण है, वह किसी से छिपा नहीं है। मनुष्य प्रकृति का पुल माना जाता है। प्रकृति के आँगन में विचरण करके वह बड़ा होता है। पर्वत, नदी, तड़ाग, शस्य श्यामला भूमि व सुवासित वायु हमारे जीवन को स्वच्छ एवं सुखद बनाती है। मनुष्य प्रकृति के नियमों को समझकर प्रकृति को गुरू मानकर उसके साथ सहयोग करता है और विशेषकर सब अवशिष्टों को प्रकृति को लोटाता है तो सृष्टी एवं मनुंष्य दोनों स्वस्थ्य रह सकते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में इसे अटल स्थान प्रदान किया गया है।

प्रकृति ने हमें प्राकृतिक संसाधन अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध कराएँ है जैसे– वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पशु आदि और ये समस्त प्राकृतिक संसाधन व मानव मिलकर पर्यावरण बनाते हैं। डी.एच. डेविस के अनुसार ''पर्यावरण का अभिप्राय भूमि या स्वरूपों से होता है, जिसमें न केवल वह रहता है, बल्कि जिसका प्रभाव उसकी आदतों एवं क्रियाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। इस प्रकार के स्वरूपों में धरातल, भौतिक एवं प्राकृतिक संसाधन, मिट्टी की प्रकृति, उसकी स्थिति, जलवायु, वनस्पति, खनिज सम्पदा, जल–धन का वितरण, पर्वत, मैदान, सूर्य ताप आदि जो भू.मंडल पर घटित होती हैं, एवं जो मानव को प्रभावित करती है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि पर्यावरण के अन्तर्गत वे समस्त भौतिक एवं जैविक रचना के तत्व सम्मिलित होते हैं, जो प्राणियों के जीवन और क्रियाओं को प्रभावित करते हैं, परन्त आज प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक शोषण, जनसंख्या वृद्धि एवं औद्योगीकरण व विकास योजनाओं के क्रियान्वयन ने पर्यावरण के स्वरूप को ही परिवर्तित करके रख दिया है, जिसके कारण पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में प्रचलित समस्याओं में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या सर्वाधिक ज्वलन्त, विभत्स तथा जटिल समस्या है। जो न केवल हमारे वर्तमान को हानि पहुँचा रहा है, अपितु भविष्य के लिए भी एक खतरा है। पर्यावरण प्रदूषण आज हमारे परिवेश का प्रतिकूल परिवर्तन है। यह परिवर्तन चाहे पूर्ण रूप से हो या मानव क्रियाओं के उपउत्पाद के रूप में, मानव को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

प्रदूषण एक सामाजिक समस्या है, विद्यालय ही एक ऐसी संस्था है जहाँ बालकों को इससे सम्बन्धित जानकारी प्रदान की जाए या जागरूकता लाई जाए तो प्रदूषण निवारण में अवश्य सहायता मिल सकती है। यही कारण है शिक्षा के प्रारम्भिक/प्राथमिक स्तर से ही प्रदूषण को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है इस प्रकार पर्यावरणीय जागरूकता लाने में समाज के प्रत्येक नागरिक को प्रयासरत रहने की आवश्यकता है, क्योंकि यही नागरिक एक विद्यार्थी, शिक्षक तथा अभिभावक तीनों की ही भूमिका निभाता है। अतः शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम से है जो कि पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

* सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, महात्मा ज्योतिराव फुले विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

आज के इस जनसंया विस्फोट तथा औद्योगिक विकास के युग में पर्यावरण का बिगड़ता हुआ संतुलन विश्वस्तर पर चिन्ता का विषय बना हुआ है। पृथ्वी ग्रह पर प्राणियों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए यह अति आवश्यक है कि पर्यावरण का शिक्षा का व्यापक स्तर पर प्रचार प्रसार हो जिससे समाज के हर वर्ग के लोगों में पर्यावरण के प्रति समझ एवं जागरूकता पैदा हो सके। अतः उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक है तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में इनके द्वारा पर्यावरण हेतु कितनी जागरूकता लाई जा रही है?

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी, शिक्षक एवं अभिभावक पर्यावरण के प्रति कितने जागरूक है? आदि शोध प्रश्नों का अध्ययन करने हेतु शोधकत्री द्वारा समस्या का चयन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्यन करना ।
- अभिभावकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।

परिकल्पना

- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता नहीं है।
- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता नहीं है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जारूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में पर्यावरणीय जागरूकता नहीं है।
- शहरी क्षेत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में पर्यावरणीय जागरूकता नहीं हे।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों में पर्यावरणीय जागरूकता नहीं है।
- शहरी क्षेत्र के अभिभावकों में पर्यावरणीय जारूकता नहीं है।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अभिभावकों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

- **न्यादर्शः** प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के 400 विद्यार्थियों, 400 पुरूष एवं महिला शिक्षकों तथा 200 पुरूष व महिला अभिभावकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में कुल 1000 न्यादर्शका चयन किया गया है। न्यादर्श के चयन में उदयपुर शहर तथा उसके समीप के ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति के अन्तर्गत लॉटरी विधि से चुना गया है।

दक्ष संग्रह हेतु न्यादर्श चयन

	ग्रामीण	शहरी	कुल
विद्यार्थी	200	200	**400**
शिक्षक	200	200	**400**
अभिभावक	100	100	**200**
कुल न्यादर्श			**1000**

शोध अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोध हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

- पर्यावरणीय प्रदूषण जागरूकतामापनी–स्वनिर्मित (विद्यार्थी)
- पर्यावरणीय प्रदूषण जागरूकतामापनी–स्वनिर्मित (शिक्षक एवं अभिभावक)
- **परिसीमनः** किसी भी वृहद् क्षेत्र के अध्ययनको सरल एवं प्रभावी बनाने हेतु उसका परिसीमन करना परमावश्यक है। यदि समस्या स्पष्ट एवं सीमित होगी तो उसका अध्ययन गहनता से किया जा सकता है। अतः अनंसुधान की वैधता, विश्वसनीयता व उपयोगी परिणामों को निर्धारित समय में प्राप्त करने हेतु भी अध्ययन का परिसीमन आवश्यक हो जाता है। अतः शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन की सुलभता हेतु अपने शोध का परिसीमन निम्न प्रकार से किया गया–
- **क्षेत्रवारः** प्रस्तुत अध्ययन उदयपुर शहर तथा उसके निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित हैं।
- **विद्यालयवारः** शोध में सरकारी एवं निजी दोनों ही प्रकार के उच्च माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।
- **कक्षावारः** प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं (कक्षा 11वीं व 12वीं)के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- **भाषावारः** प्रस्तुत शोध हिन्दी माध्यम वाले उच्च माध्यमिक विद्यालय तक ही सीमित है।

दत्त विश्लेषण

शोध कार्य के दत्तों का विश्लेषण करने हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधि प्रयुक्त की गई।

- प्रतिशत
- माध्य
- माध्य विचलन
- टी–परीक्षण

शोध निष्कर्ष

- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थी पर्यावरण प्रदूषण के प्रति औसत जागरूकता रखते हैं।
- शहरी क्षत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी पर्यावरण प्रदूषण के प्रति उच्च स्तरीय जागरूकता रखते हैं।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर है।
- ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक पर्यावरण प्रदूंषण के प्रति औसत जागरूकता रखते हैं।
- शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक पर्यावरण के प्रति उच्च जागरूकता स्तर रखते हैं।
- ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर हैं।
- ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावक पर्यावरण प्रदूषण के प्रति औसत जागरूकता रखते हैं।
- शहरी क्षेत्र के अभिभावक पर्यावरण प्रदूषण के प्रति औसत जागरूकता रखते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के अभिभावकों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- एल्टमेन आई (1975) द इनवॉयरमेण्टल एण्ड शोसल बिहेवियर, ब्रुक्स कोले : केलिफोर्निया
- अग्रवाल के. सी (1987) इनवायरमेण्टल वायलॉजी, बीकानेर (भारत) एग्रो बोटेनिकल पब्लिशर, पेज 439
- बेसिस एच. सी. एण्ड बेसिस के.एस (1991) : जनसंख्या विस्फोट और पर्यावरण, सत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।
- बेस्ट जे. डब्ल्यू (1986): रिसर्च इन एज्यूकेशन, V सर्वे, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इण्डिया, प्रा. लि. नई दिल्ली।
- बन्धुदेश एण्ड बिरबीरेट जी. (1985) : एनवारमेंटल एज्यूकेशन फॉर कन्सरवेशन एण्ड डवलपमेंट इंडिया एनवायरमेंटल सोसायटी, नई दिल्ली।
- बूच एम. बी. (1986) : ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्यूकेशन, नई दिल्ली।
- भार्गव महेश (1988) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मूल्याकंन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- भटनागर सुरेश (1998) : शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- कॉल लोकेश (1998) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिकेशन हाऊस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
- क्लार्क एल. (1957) एलीमेन्ट ऑफ इकोलोजी, न्यूयार्क (पेज 534)
- कपिल एच. के (1992) अनुसंधान विधियॉ, हरप्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा।
- कोठारी सी. आर. (1995) रिसर्च मेथडोलोजी – 'मेथडॅस एण्ड टेकनीक्स, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कुकरेती बी. आर. (1993) एन्वायरमेंटल एज्यूकेशन : ए ब्ल्यू प्रिंट, यूनीवर्सिटी न्यूज, अगस्त 16, 1993।
- द्विवेदी, ओ. पी. (1989) : वर्ल्ड रिलीज एण्ड द इनवॉयरमेंट, गीतांजली पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पेज 462।
- दीक्षित प्रभा (1987) : पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- माथुर, ए. एन. एवं अन्य (1993) : पर्यावरण शिक्षा, हिमांशु पब्लिकेशन्स, दिल्ली (भारत)।
- मिनिस्टरी ऑफ इनवायरमेंटल एण्ड फोरेस्ट गर्वनमेंट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली (भारत) वार्षिक रिपोर्ट 1994–95।

♦❐♦